



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर Indian Institute of Technology Bhubaneswar

प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर ने राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर चंद्रमा और सूर्य के अध्ययन के लिए इसरो की अभूतपूर्व यात्रा का जश्न मनाया

भुवनेश्वर, 23 अगस्त 2024: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर पिछले साल भारत के चंद्रयान-3 मिशन की सफलता के उपलक्ष्य में 23 अगस्त 2024 को पहला राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाने में राष्ट्र के साथ शामिल हुआ है। उत्सव के हिस्से के रूप में, संस्थान ने 'चंद्रयान-3 और आदित्य-एल1 मिशन: चंद्रमा और सूर्य के अध्ययन के लिए इसरो की अभूतपूर्व यात्रा' पर एक व्यावहारिक सेमिनार का आयोजन किया। इस मौके पर इसरो से डॉ. कुलदीप नेगी ने संबोधित किया और अपने अनुभव साझा किये।

वर्तमान में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), बेंगलुरु के यू.आर. राव सैटेलाइट सेंटर (यूआरएससी) में फ्लाइंट डायनेमिक्स ग्रुप में सेक्शन हेड और चंद्रयान -4 के एसोसिएट प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में कार्यरत डॉ. नेगी जियो के लिए प्रक्षेप पथ डिजाइन करने के लिए जिम्मेदार हैं। -अंतरिक्ष यान, अंतरग्रहीय और चंद्र मिशन। अपने संबोधन में, डॉ. नेगी ने बताया: "चंद्रयान -3, भारत का तीसरा चंद्र अन्वेषण मिशन LVM3 लांचर के चौथे परिचालन मिशन में शुरू हुआ। चंद्रयान-3 अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इसरो अपने चंद्र मॉड्यूल द्वारा चंद्रमा की सतह पर नरम लैंडिंग और चंद्र भूभाग पर घूमकर नई सीमाओं पर है। आदित्य-एल1 मिशन लैंग्रेजियन बिंदु एल1 पर स्थित भारत की पहली सौर वेधशाला है। इस अग्रणी उद्यम में एक अंतरिक्ष यान को गैर-प्लानर आवधिक कक्षा में तैनात करना शामिल है जिसे सूर्य-पृथ्वी प्रणाली के एल 1 लैंग्रेजियन बिंदु के आसपास हेलो कक्षा के रूप में जाना जाता है। उन्होंने आगे कहा: "किसी भी अंतरिक्ष यान मिशन के लिए उसके जन्म से लेकर कब्र तक, अंतरिक्ष उड़ान प्रक्षेपवक्र डिजाइन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस सेमिनार में चंद्रयान-3 मिशन में चुनौतियों और मिशन के संबंध में अंतरिक्ष उड़ान प्रक्षेपवक्र डिजाइन पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।"

इस सेमिनार में समग्र मॉड्यूल के लिए लक्ष्य चंद्र कक्षा प्रक्षेपवक्र डिजाइन और फिर लैंडर मॉड्यूल के लिए बहु-चरण संचालित वंश प्रक्षेपवक्र डिजाइन की व्याख्या की गई। डॉ. नेगी ने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि आदित्य-एल1 का मैनिफोल्ड-आधारित प्रक्षेपवक्र डिजाइन एल1 के चारों ओर हेलो कक्षाओं की योजना बनाने में सहायक है। सेमिनार का समापन अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए इसरो की रणनीतिक सीमा पर चर्चा के साथ हुआ।

इस अवसर पर आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रो. श्रीपद कर्माकर ने डॉ. नेगी को सम्मानित किया। कार्यक्रम का समन्वयन प्रोफेसर-इन-चार्ज (सेमिनार) डॉ. विजयकृष्ण कारी ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में संस्थान के संकाय सदस्य, कर्मचारी और छात्र शामिल हुए।
